ISBN: 9788183874298

Price: Rs.250.00

Publisher: Serials Publications

Binding: Hard Bound

Pages: 236

Edition: 2010

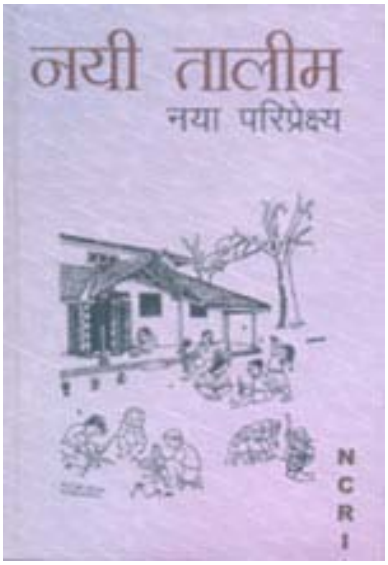

महात्मा गांधी ने आधुनिक सभ्यता को उसके समस्त अंगों व तंत्रों के साथ समग्रता में समझा था, और उसके समस्त आवरणों व अलंकरणों को उतारकर, उसका वास्तविक स्वरूप, देश व दुनिया के समक्ष 1909 में 'हिन्दस्वराज' नामक पुस्तक के माध्यम से प्रस्तुत कर दिया था। जिन कष्टों व समस्याओं से आज दुनिया ग्रस्त व कराह रही है, उसके मूल में यह आधुनिक सभ्यता है, यह बात आज से सौ वर्ष पूर्व गांधीजी ने देख व समझ ली थी। इसी के लिये उन्होंने, उसको शैतानी या राक्षसी सभ्यता कहा था। इस सभ्यता के मूल में हिंसा, प्रतिस्पर्धा, शोषण, असमानता, स्वार्थ, असीमित भोग आदि तत्वों का समावेश है और यह इन्हीं को समाज में प्रतिष्ठित करती है। इस सबका माध्यम है आधुनिक शिक्षा तंत्र। यही कारण है कि गांधीजी देश में चल रही आधुनिक शिक्षा की व्यवस्था को जड़–मूल से बदल देना चाहते थे। सच्ची शिक्षा की व्यवस्था कैसी हो इस संदर्भ में गांधीजी के प्रयोग 1896 से ही प्रारम्भ हो गये थे। इसके बाद से वह जहां भी आश्रम बना कर रहे, या लम्बे समय तक आंदोलन चलाया, वहां स्कूल अवश्य चलाये। लगभग 40 वर्षो के शैक्षणिक प्रयोगों से प्राप्त अनुभवों के निश्कर्ष के रूप में उन्होंने 1937 में 'नयी तालीम' के नाम से एक अभिनव शिक्षा व्यवस्था का प्रारूप देश के सामने रखा। गांधीजी ने नयी तालीम के द्वारा समता आधारित, शोषणमुक्त, अहिंसक समाज रचना के प्रधान लक्ष्य को प्राप्त करने का उद्देश्य अपने सामने रखा था।